प्रतिबंधित साहित्यः स्वाधीनता का प्रखर जयघोष

बीसवीं सदी के दूसरे-तीसरे दशक तक वैचारिक रूप से प्रौढ़ हो चुकी हिंदी में राष्ट्रीयता का स्वर स्पष्ट रूप से उभरने लगा था। स्वाधीनता के इस प्रखर जयघोष से उपनिवेशवादी ताकत इतनी आतंकित हुई कि उन्होंने जनमानस के इस साहित्यिक प्रतिरोध को कानून की मदद से प्रतिबंधित कर दिया था। हिंदी के इस विशिष्ट स्वर के दस्तावेज़ भारत में केवल राष्ट्रीय अभिलेखागार में ही उपलब्ध हैं। विभिन्न विधाओं में अभिव्यक्त स्वर के चुनिंदा अंशों को प्रदर्शनी के इस खंड में प्रस्तुत किया गया है। 'अभ्युदय' का 'भगत सिंह' अंक, 'चांद' का 'फांसी' अंक, 'बलिदान', 'विप्लव' एवं 'क्रांति' जैसी दुर्लभ पत्र-पत्रिकाएं व कांग्रेस समिति के जब्तशुदा पैम्फ्लेट आदि इस खंड की रोचक सामग्री की एक झलक मात्र हैं।

फाँसी-अंक

24 jan 1929

NATIONAL ARCHIVE
No. 101
Date 30.12.71
GOVT. OF IN

Highly appreciated and recommended for use in Schools and Libraries by Directors of Public Instruction, Punjab, Central Provinces and Berar, United Provinces and Kashmir State etc.. etc.

वर्ष ७ | खण्ड १

नवम्बर, १९२८

संख्या १ | पूर्ण संख्या ७३

प्राणदण्ड

[रचयिता—कविवर पं० रामचरित जी उपाध्याय]

(१)

सबको निर्मित किया ईश ने,
देकर सबको सम अधिकार।
जहाँ असमता नहीं फटकती,
वह ईश्वर का है दरबार॥

(२)

जिसने जिसे बनाया उसका,
अधिपति भी है एक वही।
दूजा उसे नष्ट करने का—
रखता है अधिकार नहीं॥

(३)

जिस कूँप को जिसने खोदा,
पाट सकेगा उसे वही।
जिस तरु को है जिसने रोपा,
काट सकेगा उसे वही॥

(४)

प्राणदण्ड देकर ईश्वर की—
घोर शत्रुता करना है।
उच्छृङ्खल हो या निन्दित हो,
अपनी लघुता करना है॥

'चांद' के प्रतिबंधित 'फांसी अंक' का प्रथम पृष्ठ, नवम्बर 1928

First page (Inner Cover) of the proscribed "Phansi" issue of "Chand", November 1928.

बिला इजाजत कोई साहब न छापें

ॐ

जंग आज़ादी

IMPERIAL ... RECEIVED. 30 MAR 1931 ... DEPARTMENT

मुसन्निफ़

महाशय मोती राम "वर्मा"

बदायूनी

शहर देहली कटड़ा बड़ियां

पेशा आज़ादी

सन् १९३० ई०

जे. एम. प्रेस देहली में छपा

मूल्य २ आना

J.M.P.D.

और करें ना वह भी क़स्द जो हो तन से रोगी

और करें ना वह भी कस्द जो हों रस के भोगी

एक बहादुर स्त्री का गायन

बतर्ज़ रसिया

पीतम चलूं तुम्हारे संग जंग में पकडूंगी तलवार

गाढ़े के सब बिस्तर बनाओ । सारी पब्लिक को पहनाओ

और मैं करूं सूत तैय्यार । जंग में ॥

ऊंच नीच सब को बतलादो । गांधी का पैग़ाम सुनादो

मैं भी करू नमक तैय्यार । जंग में ॥

जेल तोप से नहीं डरूंगी । बिना काल के नहीं मरूंगी

गोली खाने को तैय्यार । जंग में ॥

भारत को आज़ाद करूंगी । दुश्मन को बरबाद करूंगी

कुछ मत सोच करो भरतार । जंग में ॥

असहयोग की फ़ौज सजाऊं । कांग्रेस की तोप लगाऊं

दुश्मन भगें समन्दर पार । जंग में ॥

गांधी जी बन रहे कलन्दर । शशोपंज में पड़गये बंदर

देखो कहा करे करतार । जंग में ॥

अब गांधी ने कदम उठाया । गवर्मेंट का दिल दहलाया

देवी हो रही है तैय्यार । जंग में ॥

आज़ादी की छिड़ी जंग अब । बनो नायडो सरोजनी सब

बहनो हो जाओ हुशियार । जंग में ॥

महाशय मोती राम 'वर्मा' द्वारा प्रकाशित प्रतिबंधित पुस्तक 'जंगे आज़ादी' का मुखपृष्ठ व उसमें प्रकाशित कविता, 1930, देहली

Cover page, including a poetic dedication, extracted from the proscribed book entitled "Jung-e-Azaadi", published by Mahashaya Moti Ram "Verma".

विशेषांक
सत्याग्रह-समा[चार]
मूल्य
भाग १] प्रयाग, बुधवार, ता० १८ जून, १९३० ई० [अंक ६१

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY 1172 1.1.72 GOVT. OF INDIA

अखिल भारतीय कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति ने आनन्द-भवन (इलाहाबाद) में पं० मोतीलाल जी नेहरू के सभापतित्व में अपनी ४, ५, ६ और ७ जून की बैठक में निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया है :—

१– अहिंसा का भाव

अपनी पिछली बैठक समय से देश के कई भागों की घटनाओं की सावधानी से जाँच करने के उपरान्त यह कमेटी पुलिस और फौज के लाठियों की पशुतापूर्ण मार और अनावश्यक गोली चलाने तथा निर्दयता के [illegible] सहकर लोगों के अहिंसा, साहस तथा धैर्य का परिचय देने के लिए उनकी प्रशंसा करती है। कमेटी इस विजय के लिए देश को धन्यवाद देती है और सरकार को सावधान करती है कि कानून और व्यवस्था के नाम पर किये गये इसके अत्याचारपूर्ण अत्याचारों से भारत के लोग स्वराज्य प्राप्त करने के अपने दृढ़ निश्चय से नहीं डिगेंगे।

२– सरकार की दमन नीति

चूँकि सरकार सत्याग्रह आन्दोलन को दबाने के लिए व्यवस्थित रूप से दमन कर रही है और अपने उन्हीं अधिकारियों को, जो शान्ति और व्यवस्था कायम करने के जिम्मेदार हैं, लोगों पर अन्यायपूर्ण अत्याचार करने के लिए प्रोत्साहन देकर अथवा उनके ऐसे कार्यों पर आँख मूँद कर सारे देश में भय का राज्य कायम कर रही है और चूँकि इस नीति के अनुसरण में दूसरे अन्यायपूर्ण कार्यों में से निम्नांकित कार्य हो चुके हैं :—

(१) देश के अनेक नगरों और कसबों में अंग्रेज और हिन्दुस्तानी ऊँचे अधिकारियों की आज्ञा से उनके सामने निहत्थे और शान्त पुरुष, स्त्रियों और बच्चों का निर्दयतापूर्वक मारा जाना।

(२) पुरुषों और स्त्रियों पर अनुचित प्रहार करना तथा उनके गुप्त अंगों पर चोट पहुँचाना।

(३) बिना कारण गोली चलाना।

(४) घायलों के साथ अमानुषिक व्यवहार करना और रेडक्रास तथा घायल-सेवकों के कार्य में बाधा डालना।

(५) झूठे अभियोगों पर गिरफ्तार करना तथा सज़ा देना।

(६) फौजी कानून को अनावश्यक जारी करना।

(७) फौजी कानून के प्रयोग के बिना ही फौजी कानून की दशाओं को अन्यत्र से उपस्थित करना।

(८) १४४ तथा कानून की दूसरी धाराओं का दुरुपयोग।

(९) लोगों की मिल्कियत पर हस्तक्षेप करना और बलपूर्वक वास्तविक स्वामियों को अपनी वस्तु से वंचित करना।

(१०) सच्ची खबरों को छिपाना तथा झूठे और भ्रामक कम्यूनिक निकालना, हिन्दू मुसलमानों में विरोध पैदा करने की चेष्टा करना।

और चूँकि गवर्नर जनरल ने हाल में तीन आर्डिनेन्स निकाले हैं। जैसे – प्रेस आर्डिनेंस, प्रिवेन्सन आफ इन्टिमिडेशन आर्डिनेंस और अनलाफुल इन्स्टिगेशन आर्डिनेन्स। पहले आर्डिनेन्स से स्वाधीन विचार के राष्ट्रीय पत्रों का प्रकाशन बंद होगया।

प्रयाग से प्रकाशित 'सत्याग्रह समाचार', 18 जून 1930

'Satyagraha Samachar' published in Prayag, 18 June 1930.

Satyagrahi Dt 10-4-30 (No6)
IMPERIAL RECORD DEPARTMENT RECEIVED. 25 AUG. 1930

वार्षिक मूल्य ३)
छः मास का २)
एक प्रति ।)

* वन्देमातरम् *

रायबरेली

रजिस्टर्ड नं०

सत्याग्रही

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY No 1244 Date 3.1.74 GOVT. OF INDIA

सत्याग्रह कमेटी रायबरेली का अर्ध साप्ताहिक मुख पत्र ।

निर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय ।
मुई खाल की साँस सों, सार भसम होय जाय ॥

संपादक—लाल हनुमानसिंह बघेल

वर्ष १ } रायबरेली गुरुवार ता० १० अप्रैल १९३० { अंक २

रायबरेली में सत्याग्रह आरम्भ ।

पं० मोतीलालजी नेहरू की उपस्थिति में नमक बनाया गया ।

श्री सत्यनारायणजी गिरफ्तार ।

सत्याग्रह युद्ध बराबर जारी रहेगा ।

ता० ८ अप्रैल को संध्या के ६ बजे तिलक भवन रायबरेली में नमक बनाने का कार्य आरम्भ हुआ। श्री पंडित मोतीलालजी नेहरू, श्री रफीअहमद किदवाई, श्रीमोहनलाल सक्सेना की उपस्थिति में ज़िला कांग्रेस कमेटी तथा सत्याग्रह कमेटी के मंत्री श्रीसत्यनारायणजी ने १० स्वयंसेवकों के साथ नमक बनाया, बने हुये नमक को उपस्थित नेताओं ने चख कर देखा।

नौ रुपये में नमक बेंचा गया ।

जिस समय नमक बनाया जारहा था लगभग ६-७ हजार आदमियों की भीड़ थी, पुलिस भी काफी तादाद में जमा होगई थी।

नमक बनाने के थोड़ी देर बाद ही श्रीसत्यनारायणजी गिरफ्तार कर लिये गये शेष स्वयं सेवक जो उनके साथ जत्थे में थे अभी तक गिरफ्तार नहीं हुये हैं।

जनता में काफी उत्साह है ।

आज रायबरेली की जनता में काफी उत्साह दिखलाई दे रहा था। सैकड़ों स्वयं सेवक इस सत्याग्रह संग्राम में सम्मिलित होने के लिये आरहे हैं। अब नियमित रूप से तिलक भवन में सत्याग्रह जारी रहेगा।

(प्रकाशन विभाग)

"सन्देश"

मेरी आशा है कि "रायबरेली सत्याग्रही" जिस आकांक्षा और अभिलाषा से जन्म लेरहा है उसे पूरा करेगा और केवल रायबरेली के ही नहीं सारे देश के संग्राम में भाग लेकर भारत वासियों को फिर से स्वतंत्रता में मनुष्योचित जीवन व्यतीत करने के योग्य बनाने में सहायक होगा।

श्रीप्रकाश (काशी)

सत्याग्रह कमेटी, रायबरेली के हनुमान सिंह बघेल द्वारा संपादित प्रतिबंधित अर्ध साप्ताहिक पत्र 'सत्याग्रही' का प्रथम पृष्ठ, 10 अप्रैल 1930, रायबरेली

Inner cover of the proscribed quarterly newsletter/journal 'Satyagrahi', published by Shri Hanuman Singh Baghel of the Satyagraha Committee of Rae Bareli, 10 April 1930, Rae Bareli.

श्रीचन्द्रशेखर आजाद

की

जीवनी

सं०—बलदेव प्रसाद शर्मा

प्रकाशक—

आदर्श पुस्तक भण्डार

बनारस सिटी।

प्रथमबार १०००] आषाढ़ १९८८ वि० [मूल्य ॥)

आजाद की स्वरचित कविता

वही शाहे शहीदां है, वही है रौनके आलम।
वतन पर देके जां जो जंग के मैदां में सोता है॥
उसीका नाम रोशन हैं, उसीका नाम बाक़ी है।
कि जिसकी मौत पर दुनियाँ का हर इंसान रोता है॥
ज़रा बेदार हो, अब ख़्वाबे ग़फ़लत से जवानो तुम।
कि जिसमें ज़ोरे बाजू है, वही "आज़ाद" होता है॥
यही दुनियाँ से अब इस सूरमा की रूह कहती है।
ग़रीबों को मिले रोटी तो मेरी जान सस्ती है॥

हम दिखायेंगे तुम्हें वह कुव्वते फ़रियाद की।
बेसदा होगी नहीं जंज़ीर है आज़ाद की॥
कौन कहता है कि मेरा रायगां ख़ूँ जायगा।
मरने वालों ने जब एक दुनियाँ नई आबाद की॥
किस तरह से जंग करते हैं वतन के वास्ते:
किस तरह से जान देते हैं वतन के वास्ते॥
फ़कत दुनियाँ में तुम्हें थे यह बताने आये हम।
खुश रहो अहले वतन चलते हैं बन्देमातरम्॥

बनारस से प्रकाशित श्री बलदेव प्रसाद शर्मा द्वारा संपादित पुस्तक 'श्री चन्द्रशेखर आज़ाद की जीवनी' व उसमें प्रकाशित कविता, आषाढ़ 1988 वि०

A poem extracted from the book "Shri Chandrashekhar Azad Ki Jivni" published by Shri Baldev Prasad Sharma, Benaras.

सचित्र साप्ताहिक भगतसिंह-अंक

अभ्युदय

भाग २५ संख्या १३

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT RECEIVED 8 AUG 1931

(सरदार भगत सिंह)

दरेगा वो भगतसिंह शमये आज़ाद का परवाना, वतन का आशिक़ वादिक़ मये-उल्फ़त का मस्ताना।
मिसाले क़ैस लैला-ए-वतन पर जान देता था, "ख़लीक़" इसका रहेगा ताअबद दुनिया में अफ़साना।

—ख़लीक़, देहलवी।

वार्षिक मूल्य ७)] [इस अंक का ।)

त्यागी भगतसिंह

[लेखक:—पं० जवाहरलालजी नेहरू

यह क्या बात कि यह लड़का यकायक इतना प्रसिद्ध हो गया और दूसरों के लिये रहनुमा हो गया। महात्मा गांधी जी अहिंसा के दूत हैं, आज भगतसिंह के महान् त्याग की प्रशंसा करते हैं। वैसे तो पेशावर, शोलापुर, बम्बई और अन्य स्थानों में सैकड़ों आदमियों ने अपनी जान दी है। बात यह है कि भगतसिंह का स्वार्थ, त्याग और उसकी वीरता बहुत ऊंचे दर्जे की थी। लेकिन इस उत्तेजना और जोश के समय भगतसिंह का सम्मान करते समय हमें यह न भूलना चाहिये कि हमने अहिंसा के मार्ग से अपने लक्ष्य की प्राप्ति का निश्चय किया है। मैं साफ कहना चाहता हूँ कि मुझे ऐसे मार्ग का अवलम्बन किये जाने पर लज्जा नहीं होती लेकिन मैं अनुभव करता हूँ कि हिंसा मार्ग का अवलम्बन करने से देश का सर्वोत्कृष्ट हित नहीं हो सकता और इससे साम्प्रदायिक होने का भी भय ।

हम कह नहीं सकते कि भारत के स्वतंत्र होने के पहले हमें कितने भगतसिंहों का बलिदान करना पड़ेगा। भगतसिंह से हमें यह सबक लेना चाहिये कि हमें देश के लिये बहादुरी के साथ मरना चाहिये।

साप्ताहिक पत्र 'अभ्युदय' का 'भगत सिंह' अंक एवं उसमें प्रकाशित जवाहरलाल नेहरू का लेख, 8 मई 1931

Extracts from the special issue of the weekly newsletter/journal "Abhyudyaya" on Bhagat Singh, including a write-up authored by Jawaharlal Nehru, 8 May 1931.

नई कजली

कजली बमकेस

उर्फ

भगतसिंह की फाँसी

संग्रहकर्ता तथा प्रकाशक—

पं० प्रभुनारायण मिश्र

स्टेशन रोड, गया।

और

दशाश्वमेध, बनारस सिटी।

प्रथमबार] १९३१ [मूल्य -)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No ....
Date ....
GOVT. OF INDIA

* वन्देमातरम् *

* कजली बमकेस *

उर्फ

भगतसिंह की फाँसी

कजरी

नइया पार करो भारत की आके कृष्ण मुरारी ना ॥
बीच भंवर में कलपत हैं बिलकुल नर नारी ना।
बिन तोरे दुख पर दुख सहते निस दिन भारी ना ॥
एक बेर भारत को फिर से लेव उबारी ना।
गोपाल कहते यही अरज हौ अबकी पारी ना ॥

पं० प्रभुनारायण मिश्र द्वारा संग्रहित व प्रकाशित प्रतिबंधित पुस्तक 'नई कजली बम केस उर्फ भगत सिंह की फांसी' का मुखपृष्ठ व उसमें प्रकाशित कजरी, 1931, गया तथा बनारस

Main title page and (Karjre) 'Nayi Kajli Ban Case Urf Bhagat Singh Ki Phansi' a proscribed book published by Pandit Prabhunarayan Mishra.

रणधीर द्वारा संपादित हस्तलिखित पत्र, 'बुंदेलखण्ड केसरी' का मुखपृष्ठ, 18 दिसम्बर 1932

Title cover of the hand written newsletter "Bundelkhand Kesri", edited by Randhir, 18 December 1932.

Oct. 22, 1932 - Saturday
No 8
British Adalat-Bahishkar-Diwas
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY GOVT. OF INDIA 1168 1-1-72
17 FEB. 1933 DEPARTMENT

२२ अक्तूबर १९३२

शनिवार

बृटिश अदालत बहिष्कार दिवस

नौकरशाहीने देशका खून चूसनेकी जो हजारों तरकीबें चलाई हैं, अदालतें भी उन्हींमेंसे हैं। सारा देश अच्छी तरह जानता है कि इन अदालतोंमें सिवाय अन्याय और अत्याचारके कुछ भी नहीं होता। जाल और झूठका तो ये अदालतें घर हैं। हमारे लाखों करोड़ों भाई इन अदालतोंके फेरमें पड़कर कौडी कौडीको तबाह हो गये हैं और भीख मांगने लगे हैं यदि आपमें कुछ भी बुद्धि हो तो पिशाचिनी अदालतोंपर लानत भेजिये और आपसका भाई भाईका झगडा अपने ही घरमें तै कीजिये। यदि अपनेसे झगडा तै न हो सके तो अपने बड़े बूढ़ोंको पंच बनाइये और पंचायतोंके द्वारा सब मामले तै कराइये। आपका धन चौपट होनेसे बचेगा, परेशानी भी न होगी और बेइज्जती भी न होने पायेगी। गांव गांवमें पंचायतें स्थापित कीजिये और इन अदालतोंको तरफ भूलकर भी न देखिये। अदालतबाजीका जहर समाज और देशके शरीरसे बिलकुल बाहर निकाल फेंकिये।

अधिनायक,

सत्याग्रह संग्राम, काशी।

ब्रिटिश अदालतों के बहिष्कार का आह्वान करते हुए निकाला गया परचा, 22 अक्टूबर 1932

Pamphlet urging people to boycott British Courts, 22 October 1932.

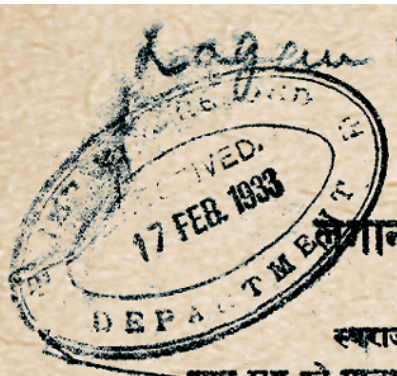

Lagan ka ek Paisa bhi dena pap hai

RECEIVED. 17 FEB. 1933 DEPARTMENT

लगान का एक पैसा भी देना पाप है

किसानो के नाम कांग्रेस का हुक्म

स्वराज्य के लिये हमारा क्या कर्तव्य है ?

आप सब को मालूम है कि लगभग ६ महीने से हमारे देश भर में अंग्रेजी राज्य के खिलाफ एक ज़ोर लड़ाई हो रही है। इस लड़ाई का मतलब यह है कि हमारे देश में हमारा राज्य हो और अंग्रेज़ी राज्य जो हमारे देश का धन लूट कर विलायत ले जा रही है और हमारे खून को चूस रही है वह आयन्दा ऐसा न कर सके। देश भर में किसानो का जो कष्ट हो रहा है उसको सहना अब सक्ति के बाहर होगया है। फसल की खराबी, लगान का बढ़ जाना, मार पीट करना, भाव का सस्ता होना—यह सब ऐसी बातें हैं कि जिनके कारण किसानो की हालत बहुत खराब होगई है और यह बात बिल्कुल साफ है कि जब तक यह अंग्रेजी राज्य कायम है तब तक किसानों को कोई सुख नहीं हो सकता।

किसान भाइयो! तुम्हारा कर्तव्य है कि अब तुम यह कसम खालो कि 'हम लगान की एक कौड़ी भी न देंगे'। अगर तुम जिमीदारों को लगान देना बन्द कर दोगे तो जिमीदार भी मजबूर होकर सरकार को मालगुज़ारी देना बन्द कर देंगे और तब सरकार अपना राज्य किसी तरह भी नहीं चला सकेगी। तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे ही कष्टों को दूर करने के लिये महात्मा गांधी, पं० जवाहरलाल नेहरू आदि बड़े २ नेता और लगभग एक लाख भाई जेल के दुःख उठा रहे हैं। हजारों बहनें और बच्चे भी जेल में पड़े हैं। सरकार का दिवाला निकल गया है और अब थोड़ी ही ताक़त लगाने की और ज़रूरत है। ऐसी हालत में तुम सब लोग क़सम खाकर प्रतिज्ञा करो कि :—

१. लगान की एक कौड़ी भी जिमीदार को न देंगे।

२. विदेशी कपड़ा और विलायत की बनी कोई चीज जैसे खिलौना, लालटेन, मट्टी का तेल, सिगरेट इत्यादि भूल करके भी नहीं मोल लेंगे।

३. विदेशी कपड़ा किसी बाज़ार में नहीं बिकने देंगे। उसकी दूकानों पर धरना देंगे।

४. शराब, ताड़ी और दूसरी नशीली चीज़ें कभी नही इस्तेमाल करेंगे।

५. गांव गांव में तिरङ्गा राष्ट्रीय झण्डा लगावेंगे और उसकी रक्षा करेंगे। कांग्रेस में पूरे तौर से शरीक होंगे और उसका हुक्म मानेंगे।

जिमीदार भाइयों को भी चाहिये कि वे साफ साफ सरकार से कह दें कि हम मालगुज़ारी अदा नहीं कर सकते। ज़िमीदारों की भी जो खराब हालत आज कल हो रही है वह अंगरेज़ी सरकार ही के कारण है। इस लिये उनको भी चाहिये कि वे सरकार का साथ छोड़ कर खुल्लमखुल्ला कांग्रेस का साथ दें।

ज़िला कांग्रेस कमेटी, उन्नाव।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY GOVT. OF INDIA No 1141 Date 31-12-71

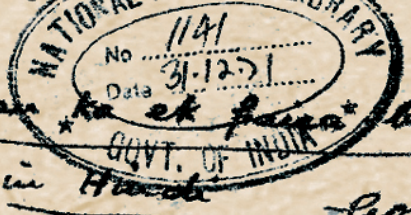

Lagan ka ek paisa bhi dena pap hai in Hindi
Govt. of U.P.
1 copy

अंग्रेजी सरकार को लगान न देने की अपील में जिला कांग्रेस कमेटी, उन्नाव द्वारा निकाला गया पर्चा

Pamphlet issued by the Zila Congress Committee of Unnav, urging people to stop paying taxes to the British Government.

धर्मवीर म॰ राज पाल की पुण्य स्मृति में

बलिदान

वार्षिक मूल्य	एक रुपया	संपादक— सत्यकाम विद्यालंकार	विदेश से	ढाई शिलिंग
एक प्रति	दो आना	भीमसेन वर्मा	इस अङ्क का	चार आने

भाग २	लाहौर, वैशाख १९९२, एप्रिल १९३५ दयानन्दाब्द १११	अङ्क १

वैदिक राष्ट्र-गीत

[अनु०—श्री पं० सर्वदेव शर्मा साहित्यालंकार एम० ए०, एल० टी०]

सत्यं बृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति। सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ॥ अथर्व कांड १२–१ ॥

(रुचिरा छन्द)

सत्य सनातन ज्ञान बृहत् तप, क्षात्र तेज व्रत बलधारी।
पृथ्वी को धारण करते हैं, कर्मवीर वर नर-नारी ॥
भूत भविष्यत् वर्तमान में भू-पालन करने हारी।
बने विश्व में मही हमारी विमल कीर्ति भरने हारी ॥१॥

असंबाधं मध्यतो मानवानां यस्या उद्वतः प्रवतः समं बहु। नाना वीर्या ओषधीर्या बिभर्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां नः ॥ २ ॥

जिस पृथ्वी के पुत्र पूर्णतः प्रेम परस्पर करते हैं।
उन्नति पथ में असम्बाध हो आगे ही नित बढ़ते हैं ॥
जो पृथ्वी बल वीर्य शालिनी ओषधिवर धरने हारी।
वही मही हो पूज्य हमारी विमल कीर्ति करने हारी ॥२॥

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः। यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्व पेये दधातु ॥ ३ ॥

सत्यकाम वेदालंकार व भीमसेन वर्मा द्वारा संपादित प्रतिबंधित पत्र 'बलिदान' के नववर्षांक का मुखपृष्ठ व उसमें प्रकाशित गीत, अप्रैल 1935, लाहौर

Title page, including a song, extracted from 'Balidan', a proscribed newsletter Satyakam journal edited by Satyakam Vedalankar and Bhimsen Verma, April 1935, Lahore.

क्रान्ति

"क्रान्ति ही आज़ादी का सच्चा मार्ग है।"

—लेनिन

वर्ष १] कानपुर अक्टूबर १९३९ ई० [अङ्क ३

हिन्दुस्तान भर के लोगों में अब इतनी जागृति हो चुकी है कि धमकियों या उनके मुताबिक़ कार्रवाई करने से भी उसे दबाया नहीं जा सकता। निरंकुश स्वेच्छाचार के दिन अब हमेशा के लिये लद गये। प्रजा की उठती हुई भावना को भीषण आतङ्क से कुछ समय दबा देना तो शायद सम्भव है लेकिन हमेशा के लिये उसे नहीं दबाया जा सकता, इस बात का मुझे पूरा यकीन है।

महात्मा गान्धी,

क्या यह मौक़ा हमारे ब्रिटिश शासकों को यह याद दिला देने का नहीं है कि स्वेज़ नहर के पूर्व एक प्राचीन और श्रेष्ठ सभ्यता वाला देश है जो कि स्वतन्त्रता के अपने जन्म सिद्ध अधिकार से वंचित है और जो ब्रिटिश साम्राज्य के पैरों तले पड़ा कराह रहा है? और क्या यही ब्रिटिश लोगों को बतला देने का वक्त नहीं है कि जो खुद ग़ुलाम हैं वे दूसरों की आजादी की लड़ाई के लिये नहीं लड़ सकते?

सुभाष चन्द्र बोस

राजा राम शास्त्री द्वारा संपादित साम्यवादी पत्रिका 'क्रांति', अक्टूबर 1939

"Kranti" a Communist newsletter edited by Raja Ram Shastri, October 1939.

यू० पी० सरकार द्वारा ग्राम सुधार पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत

एक प्रति ।=)
फ़ी माही २॥)

विप्लव

वार्षिक ४॥)
विदेशों से ६)

तुम करो शांति-समता प्रसार,
विप्लव ! गा अपना अनल गान !

संख्या ६ | भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन का अग्रसर मोर्चा | अप्रैल १९३९

"कांग्रेस दृढ़ता-पूर्वक इस बात का एलान करती है कि वह राष्ट्र के लिये पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करेगी और स्वतंत्र भारत के लिये इस देश के निवासियों द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों की वैधानिक सभा द्वारा ही—बिना किसी प्रकार के विदेशी हस्तक्षेप के शासन विधान तैयार करेगी। इसके अतिरिक्त कोई दूसरा शासन विधान हम किसी भी अवस्था में स्वीकार नहीं कर सकते।"

राष्ट्रीय माँग का प्रस्ताव
कांग्रेस अधिवेशन
त्रिपुरी

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

सुधारक हार

देश भर के प्रतिनिधि एक उलझन और आशंका की अवस्था में त्रिपुरी में एकत्र हुए थे। कहने को हमारे लीडर एलान कर चुके थे कि कांग्रेस में दो दलों का, दाएँ या बाएँ का कोई सवाल नहीं। इसका मतलब यह नहीं था कि लीडरों को कांग्रेस में मतभेद होने की ख़बर नहीं थी। इसका मतलब था कि हमारे वे लीडर, जो गांधीजी के चारों ओर ग्रहों की तरह घिरकर हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन की नीति को निश्चित करने का अधिकार अपने हाथ में रखते आये हैं उन दलों की कोई बात सुनने के लिये तैयार नहीं थे, जो कांग्रेस के राजनीतिक कार्यक्रम को ऐसा रूप देना चाहते हैं, जिसमें इस देश के किसानों और मज़दूरों के हितों का प्राधान्य हो. जो केवल यूनियन जैक के स्थान पर तिरंगा झंडा फहरा कर ही संतुष्ट नहीं हो जाना चाहते!

त्रिपुरी-कांग्रेस से पहले कांग्रेस के प्रधान के चुनाव के अवसर पर जनता ने सुभाष बाबू के पक्ष में राय देकर इस बात का फ़ैसला दे दिया था कि वे क्या चाहते हैं। उस समय जनता ने इस बात का फ़ैसला दे दिया था कि वह किस प्रकार का कार्यक्रम चाहती है। सुभाष बाबू महात्मा नहीं दिव्य पुरुष नहीं। उनके पक्ष में जो राय जनता ने दी थी, वह सुभाष बाबू को नहीं; बल्कि उस कार्यक्रम को दी थी, जिसके सुभाष बाबू प्रतिनिधि थे।

भारत के राष्ट्रीय आंदोलन का पत्र 'विप्लव', अप्रैल 1939

"Viplav" a newsletter highlighting India's freedom struggle, April 1939.

आजादीका संदेश

आजादीका आन्दोलन आगे बढ़ाने के लिये हर आदमीको इस बातकी स्वतंत्रता है कि वह अहिंसाका पालन करते हुए अधिक से अधिक जो कर सकता है, वह करे। हड़तालें करके और दूसरे सभी तरह के उपायों से सारी सरकारी हुकूमतको बेकार कर देना चाहिये। सत्याग्रहीको यह ध्यानमें रखना चाहिये कि वह जिन्दा रहनेके लिये नहीं बल्कि मरनेके लिये निकल रहा है। व्यक्तियों के बलिदान से ही राष्ट्र जीवित रहता है।

करेंगे या मरेंगे

—महात्मा गांधी

(गिरफ्तारीके वक्तका सदेश)

गिरफ्तारी के वक्त महात्मा गांधी द्वारा दिया गया आज़ादी का संदेश
तथा करो या मरो की उद्घोषणा का पर्चा, 1942

Pamphlet containing Gandhiji's famous message of freedom given at the time of his arrest, 1942.

-153-

बंगाल के मजदूरों से निवेदन

Translation of P.24 P.142

----****----

मेरे प्यारे मजदूर भाइयों —

आपको आज यह मालूम हो गया है कि हमारे गांधीजी, जवाहरलाल, आजाद आदि सब प्रमुख देश नेता पकड़ लिये गये हैं। हमारे देश के मालिक हम हैं और कांग्रेस यह चाहती है कि यह ब्रिटिश सरकार यहां से चली जाय। इसलिए सारे हिन्दुस्तान में गांधीजी के हुक्म से एक बड़ा आन्दोलन शुरू हो गया है। बम्बई, पूना, अहमदाबाद, कानपुर, दिल्ली, लखनऊ, नागपुर, इलाहाबाद पटना आदि जगहोंमें हमारे मजदूर भाई इस आन्दोलनमें शामिल हो गये हैं। सब जगह में जुल्मबाज गवर्न्मेन्ट ने हमारे निर्दोष मजदूर भाइयोंको लाठी और गोली चलाकर मार डाला है और बहुत से मजदूर अस्पताल में लाठी और गोलीसे जख्मी होकर पड़े हैं। हम जानते हैं कि वे लोग हमारी चेतना के लिए यह कर रहे हैं। सिर्फ बंगाल ही में हमारे मजदूर भाई आँखें बन्द किये पड़े हैं। हिन्दुस्तान के युवक और मजदूर आजादीके लिये जान हथेली पर रखकर लड़ रहे हैं। तब आखिर कारण क्या कि बंगाल ही के मजदूर चुप बैठे तमाशा देखें ?

हिन्दुस्तान के सब उठे हुए मजदूर आपसे अपील कर रहे हैं। आपको यह अपील सुननी ही पड़ेगी। हिन्दुस्थान की इस जालिम गवर्न्मेन्ट को तोड़ने के लिए आपको इस आजादी की आखिरी लड़ाई में शामिल होना ही पड़ेगा।

हरेक मिल—हरेक कारखानेमें इस बातकी घोषणा कर दीजिये कि "बन्द कर दो जालिम गवर्न्मेन्ट की इस पैसे कमाने और हम पर जुल्म करने की जगह को एवं हिन्दुस्थान की इस लड़ाई में शामिल हो जाओ"।

करो या मरो।

निवेदक—

बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस सभा।

करो या मरो की घोषणा के साथ बंगाल के मजदूरों से आंदोलन में भाग लेने की अपील करता हुआ बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस सभा का पर्चा, 1942

A pamphlet published by the Bengal Provincial Congress containing the powerful public slogan of "Karo Ya Maro", urging the Bengal labourers to participate in the freedom struggle, 1942.

* ॐ *

बन्देमातरम्

नहिं रखनी नहिं रखनी सरकार । जालिम नहिं रखनी ॥
आये थे व्यापार करन को । बन गये दावेदार ॥ जालिम
भूखों मरें किसान देश के । मजा करे सरकार ॥ जालिम
मुसलमानोंका मक्का छीना । सिक्खोंका दरबार ॥ जालिम
लाला लाजपत कतल कराया, जवाहर को डंडों पिटवाया
भगदत्त को कैद कराया । दियादास को मार ॥ जालिम
पुलिस और फौज यूँ बोली । अब हम चलायें किसपर गोली
ये सब हैं अपने हमजोली । तू हैगो हुशियार ॥ जालिम
पेशावर से शहरमें जाकर । परजा को निहत्थी पाकर ।
मशीनगन की बाढ़लगाकर । दिये सैकड़ों मार ॥ जालिम
अब स्त्रियों का नम्बर आया । आगरे में डंडों पिटवाया ।
कमलावती को जेल में पाया । सरोजनी पर किया भूखका वार
नहिं रखनी नहिं रखनी सरकार जालिम नहिं रखनी ॥

प्रकाशक—रूपचन्द पंजाबी
कचौड़ीगली, बनारस सिटी ।

मूल्य)। पैसा.

नोट—स्वदेशी वस्त्र धारण करने वाले सज्जनो से विनीत प्रार्थना यह है कि एक तो वे अपने व्यवहार की प्रत्येक वस्तुयें स्वदेशी ग्रहण करें, दूसरे वह स्वदेशी वस्तु उन्हीं से खरीदें जो कि स्वदेशी वस्तु ग्रहण करने का संकल्प कर चुके हों अथवा स्वदेशी वस्तु का व्यहार करते हों ।

पञ्चानन प्रेस सप्तसागर काशी

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 1278
Date 10.1.72
GOVT. OF INDIA
25 AUG 1930

रूपचन्द पंजाबी द्वारा प्रकाशित प्रतिबंधित पर्चा 'बन्देमातरम्' का मुखपृष्ठ, बनारस

Cover page of the proscribed pamphlet entitled 'Vande Mataram', published by Rupchand Punjabi.

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 1286
Date 12.1.72
GOVT. OF INDIA

IMPERIAL RECORDS
RECEIVED
25 AUG. 1930
DEPT

स्वराज्य कैसे मिलेगा ?

देश की कंगाली बहुत बढ़ गई है और दिन दिन बढ़ती ही जाती है। किसान मजूर खाने पहरने के लिये तरसते हैं। अंग्रेजी राज आने के पहले हमारी यह दशा कभी नहीं थी। देश में १०० में से ६६ आदमी न पेट भर खाने को पाते हैं न उन्हें तन ढकने को पूरा कपड़ा मिलता है। देश में इतना अन्न और इतनी रुई पैदा होती है वह सब महाजन के ब्याज, जमींदारों की मांग और सब से ज्यादा सरकारी कर में ही सोख जाती है। इसका कारण अंग्रेजी राज की निर्दय शासन प्रणाली है। अर्बों रुपया जमीन के कर, नमक के कर, विलायती अफसरों की पेनशन वगैरह में चला जाता है। देश की आमदनी का आधे से ज्यादः रुपया फौज के खर्च में चला जाता है। एक बड़े लाट साहब ही २१०००) रुपया महीना तनख्वाह ले लेते हैं और पांच वर्ष पीछे जब विलायत जाते हैं तो जब तक जीते हैं पेनशन पाते रहते हैं। पुलिस, फौज, माल, आबकारी, अदालत वगैरह में जहां हिन्दुस्तानी सरकारी नौकर को २०) तनख्वाह मिलती है वहां गोरे नौकरों को १००) रुपया दिया जाता है। इसी तरह की सैकड़ों बातें हैं जिनसे देशका अन्न, रुई और रुपया विदेश खिंचता जाता है, इसी लिये हम लोग भूखों मरने लगे।

महात्मा गांधी ने देश की दुर्दशा देख कर दुख से बड़े लाट की मारफत अंग्रेज सरकार को कहा कि नशा बिकना बन्द कर दो, जमीन की मालगुजारी आधी करदो, बड़े बड़े सरकारी नौकरों की तनख्वाह घटा कर आधी कर दो, नमक का कर छोड़दो, पर अंग्रेज सरकार ने इनकी एक न सुनी।

महात्मा गांधी ने दुखी होकर यह आज्ञा दी है कि हम लोग विलायती चीजों को भरसक न खरीदें और विलायती कपड़े का पहरना तो पाप समझें, भांग, गांजा, चरस, अफीम, शराब, ताड़ी वगैरह नशों को एक दम छोड़ दें। देश की रुई का हाथ के कते सूत से हाथ का बुना कपड़ा पहनें और सरकार के कानून की परवाह न करके अपने हाथ का बना नमक खायं। आपस में पंचा करें, कचहरी में मुकदमा न लड़ कर पञ्चायत से आपस में झगड़ा तै करलें।

हम देखते हैं गोरे तो थोड़े से हैं बाकी हमारे ही भाई पुलिस, फौज, आबकारी और कचहरी में काम करते हैं, डाक, तार, चुंगी, रेल जहां देखो हमारे हिन्दुस्तानी लोग ही काम चलाते हैं। खेती किसानी, मजूरी, चतूरी, दूकानदारी, करने वाले भी हमी लोग हैं। जो हम सब मिलकर सरकार का सम्बन्ध छोड़ दें और कह दें कि चाहे सरकार हमें मारे चाहे छोड़े हम ऐसा अन्यायी सरकार का न कानून मानेंगे न उसका साथ देंगे तो सरकार तुरन्त लुंजो और पंगुल हो जाय। पहले वह थोड़ा सा जुल्म करेगी, हम लोगों को जेल भेजेगी, कुछ को गोली से मारेगी कुछ को फांसी पर लटकायेगी। क्योंकि हमारे बहुत से नादान भाई राजे, तालुकेदार, जमींदार, पलिस और फौज के नौकर सरकार का साथ देंगे अन्त में जब वह देखेंगे कि हमारे ही भाई हमारे हाथ से मर रहे हैं तो वह सरकार का अन्यायी पक्ष छोड़ बैठेंगे और सरकार हार जायगी।

सरकारी नौकरों को भी हम अन्यायी सरकार का पक्ष लेने के कारण सब जगह इस तरह सीधा कर सकते हैं कि उनके साथ खान पान बेटी व्यवहार लेन देन और काम काज छोड़ दें। जब दूकानदार, सफाई करने वाले, कपड़ा धोने वाले, हजामत बनाने वाले सभी सरकार के पक्ष में जाने वाले देशी सरकारी नौकरों का सम्बन्ध छोड़ देंगे तो वह हमारे पक्ष में आजायेंगे, इस तरह बिना किसी का एक बूंद खून गिराये हमें स्वराज्य मिला धरा है। भाइयो सोचो और उठ खड़े हो।

विनीत:—
राधामोहन गोकुल जी

वाङ्मय प्रेस-कानपुर

राधामोहन गोकुल द्वारा कानपुर से निकाला गया परचा 'स्वराज्य कैसे मिलेगा ?

"Swarajya Kaise Milenga", a pamphlet brought out by Radha Mohan Gokul, Kanpur.

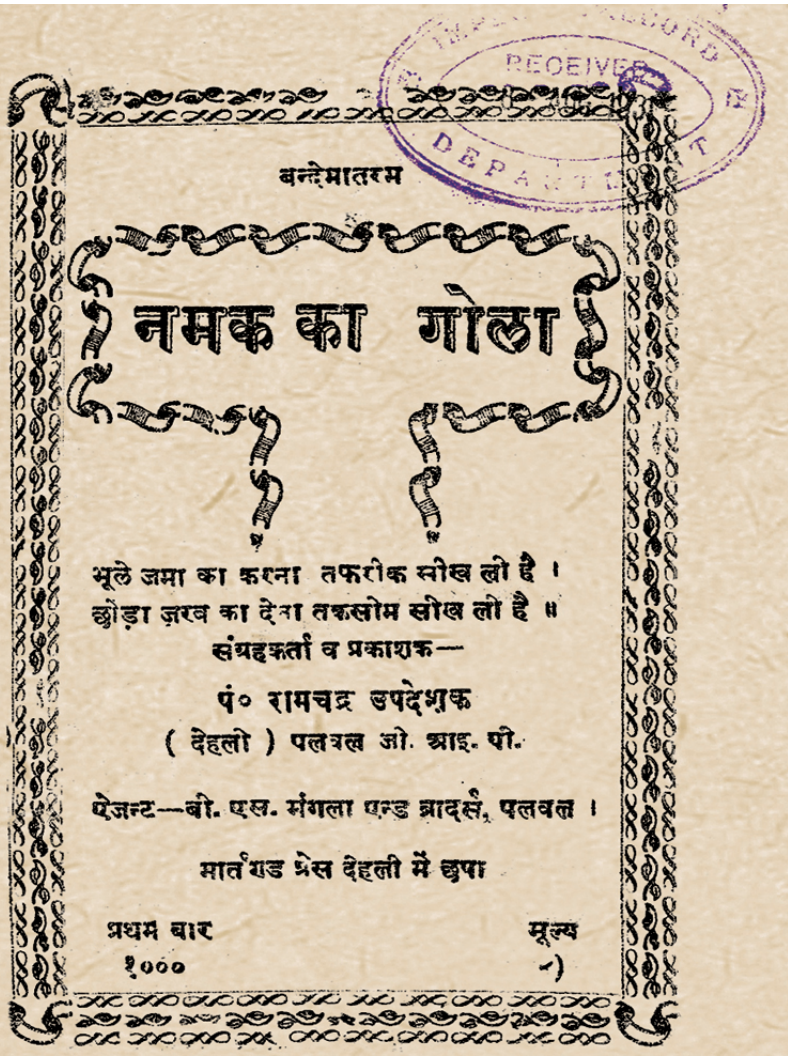

बन्देमातरम

नमक का गोला

भूले जमा का करना तफरीक सीख ली है ।
छोड़ा ज़रब का देना तकसीम सीख ली है ॥

संग्रहकर्ता व प्रकाशक—

पं० रामचद्र उपदेशक

(देहली) पलवल जी. आइ. पी.

ऐजन्ट—बी. एस. मंगला एन्ड ब्रादर्स, पलवल ।

मार्तण्ड प्रेस देहली में छपा

प्रथम बार	मूल्य
१०००	-)

(१२)

(११)

रासिया

भारत भयो बहिन दुखारी यह मिट जायें अ धारी ।
जा दिन से भारत में बहना इनके कदम बढाया है ॥
वादिन से भारत माता को इनने कष्ट दिलाया है
रोंय रोंय भारत माता अब कहरही हाय पुकार ।
किसी दिन यह देश हमारा माला माल खुश हाली था
दुध दहीं और अनाज घृत से भारत कहीं न खालीथा
जब से आये बहिन विदेशी कर रहे हाय खुवारी
जिस दिन जंग छिड़ा जबन से हाहा हमारी खाते थे
पास गांधी बाबा के दोड़ २ जाते थे ।
बाके बदले में बहिन रोटि बिल कर दिया जारी यह
जमना लाल, जवाहर बहिना भारत की उजयाला हैं ।
भारत बागे बहारका बहिनो गांधी देखो माली है ॥
अण में रामचन्द्र तिहारी यह मिट जांये अ० ।

(१२)

फैसन

मूँछ मुड़ा फैशन चला देखलो इस देशमें ।
मर्द भी रहने लगे है ये होजड़े के भेश में ॥

पलवल के पं० रामचन्द्र 'उपदेशक' द्वारा संग्रहित व प्रकाशित पुस्तक 'नमक का गोला' का मुखपृष्ठ व एक कविता

Cover page and a poem extracted from "Namak Ka Gola" published by Pandit Ramchandra "Updeshak".

❋ वन्देमातरम् ❋

स्वदेश का विजयांक

831.43
9623S

[संपादक—पाण्डेय बेचनशर्मा, 'उग्र']

"बने एक ही मिट्टी के दो पुतले हैं भाई-भाई।
हिन्दू-मुसलिम लड़ें देश पर विपद घनघटा घिर आई।
अरे, आज तो परम तपस्वी का सिंहासन डोल उठा।
पशुता के प्रांगण में वह यों सकरुण स्वर से बोल उठा।
जल पीकर ही रहूँ औ आराधन व्रत मैं कर पाऊँ।
सूने सिंहासन पर अपने मालिक को बिठला आऊँ। —सुरेन्द्र शर्मा।

इस प्रतिका मूल्य ।=)

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' द्वारा संपादित 'स्वदेश का विजयांक'

"Swadesh Ka Vijayank", a pamphlet edited by Pandeya Bechan Sharma "Ugra".

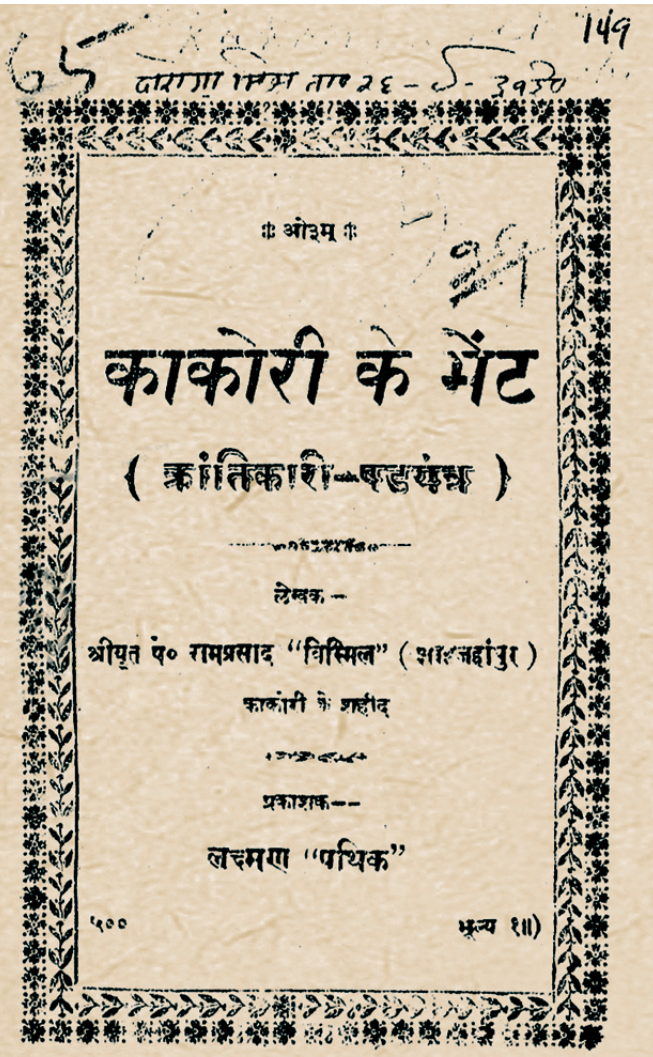

॥ ओ३म् ॥

काकोरी के भेंट

(क्रांतिकारी-षड्यंत्र)

लेखक –

श्रीयुत पं० रामप्रसाद "बिस्मिल" (शाहजहांपुर)

काकोरी के शहीद

प्रकाशक—

लक्ष्मण "पथिक"

५०० मूल्य १॥)

संक्षिप्त विवरण ।

अगस्त मास सन् १९२५ की बात है । ११ अगस्त के एक अंगरेज़ी दैनिक पत्र में, ९ अगस्त सन १९२५ की रात को लखनऊ के आगे काकोरी स्टेशन के पास चलती रेल में डाका पड़ने और उसमें से सरकारी ख़ज़ाने के लूटने की ख़बर बड़े मोटे शीर्षकों में छपी थी। इस घटना से प्रान्त भर में बड़ी सनसनी फैल गई। पुलिस बड़ी तत्परता से इस घटना का अनुसन्धान कर रही थी। सम्भवतः डेढ़ महीने तक पुलिस पता लगाती रही। अन्त में २६ सितम्बर के लगभग एकाएक पुलिस ने गिरफ्तारियां और तलाशियां शुरू करदीं। कानपुर, आगरा, इलाहाबाद, लखनऊ, बनारस, शाहजहांपुर आदि शहरों में तलाशियां तथा गिरफ़्तारियां हुईं। न्याय तथा शान्ति-स्थापना के नाम पर अमीर, ग़रीब सभी के घर छाने गये। हर जगह पुलिस का आतङ्क था। गिरफ़्तार हुए व्यक्तियों में अधिकता उन्हीं देशवासियों की थी, जो कि कांग्रेस के कार्यकर्त्ता थे अथवा जो अन्य किसी कारण से जनता के श्रद्धापात्र थे। गिरफ़्तारियों के समय प्रायः सर्वत्र पुलिस की धांधागर्दी देख पड़ती थी।

आश्विन का महीना था और दुर्गा-पूजा के दिन थे। जिस समय देश-वासी विजया-दशमी और दुर्गापूजन बड़े समारोह से मना रहे थे, श्रीमती पुलिस महारानी भी कुख्याति का सञ्चय कर रही थीं।

राम प्रसाद 'बिस्मिल' रचित पुस्तक 'काकोरी के भेंट'

"Kakori Ki Bhet", a book authored by Ram Prasad "Bismil".

बन्देमातरम्

भारतमाता के जखमी लाल

अर्थात

आजादी की भेंट

संग्रहकर्ता—

आर० एन० शर्मा

प्रकाशक—

रामरिछपाल अवधूत देहली

मार्तण्ड प्रेस देहली में छपा

तीसरी बार १००० मूल्य ―)

IMPERIAL RECORD
RECEIVED
30 MAR. 1931
DEPARTMENT

जोशीला खून

दोहा

भारत के वर वीर गण सज्जन सभय सुजान ।
दर्द वतन सुन लीजिये जरा लगाकर ध्यान ॥

चौबोला

जरा लगाकर ध्यान विप्र सूदन था एक नामी ।
गवर्नमेंट का भक्त रात दिन करता फिरे गुलामी ॥
उमगों से भरपूर और था वह जुल्मों का बानी ।
नमकहरामी भारत का जिन लई शीश बदनामी ॥

कव्वाली

पिसर था एक घर जिसके नाम घनश्याम कहलावे ।
सदाचारी बड़ा भागी दिलावर जो न कहलावे ॥
थी जिसकी नौजवानी की नशों में खून जोशीला ।
रंगा था देश के रंग में भरा था भाव भड़कीला ॥
छोड़ कालिज को आकर वह लगा भारत की सेवा में ।
वह बाहर और भीतर से रंगा भारत की सेवा में ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 289
Date 6.12.71

आर० एन शर्मा द्वारा संकलित 'भारत माता के जखमी लाल' का मुखपृष्ठ व उसमें छपी कविता

Cover page including a poem, extracted from "Bharat Mata Ke Zakhim Laal", a publication brought out by R.N. Sharma.

आजादी की उमंग

213. राष्ट्रीय गान

RECORD DEPARTMENT RECEIVED 23 MAY 1931

(कानपुर के शेर हरदोई जेल में)
श्रीयुत गणेश शंकर विद्यार्थी, (कानपुर)
संचालकः—इन्द्र पुस्तकालय, सआदतगंज लखनऊ

आजादी की उमंग

अथवा

राष्ट्रीय गान

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY GOVT. OF INDIA No. 213 Date

॥ बन्देमातरम् ॥

बोलिये सबमिल महाशय मन्त्र बन्देमातरम् ।
तीनोंभुवन में गूंज जाये शब्द बन्देमातरम् ॥
बनजाय सुखदाई हमारा मन्त्र बन्देमातरम् ।
हो हमारी पाठ पूजा मन्त्र बन्देमातरम् ॥
मन्दिरों मस्जिद गुरुद्वारा व गिरजा हो यही ।
मज़हब बने बस हम सभों का एक बन्देमातरम् ॥
हाथ में हो हथकड़ी और बेड़ियाँ हों पाँवमें ।
गायेंगे उनको बजाकर गीत बन्देमातरम् ॥
इसलिये धिक्कार है सौबार जो कहता नहीं ।
हूँ प्रेम में उन्मत्त होकर मन्त्र बन्देमातरम् ॥
भारत हमारा देव मन्दिर और मस्जिद भी यही ।
हिन्दू मुसलमां हो उपासक मन्त्र बन्देमातरम् ॥
सब ही से यह बोलना थे 'इन्द्र' तुमको चाहिये ।
भारत निवासी जयति गान्धी और बन्देमातरम् ॥

देशभक्ति पूर्ण पुस्तक 'आज़ादी की उमंग' का मुखपृष्ठ व उसमें छपी कविता

Cover page and a poem extracted from "Azadi Ki Umang" a book on the Indian freedom struggle.

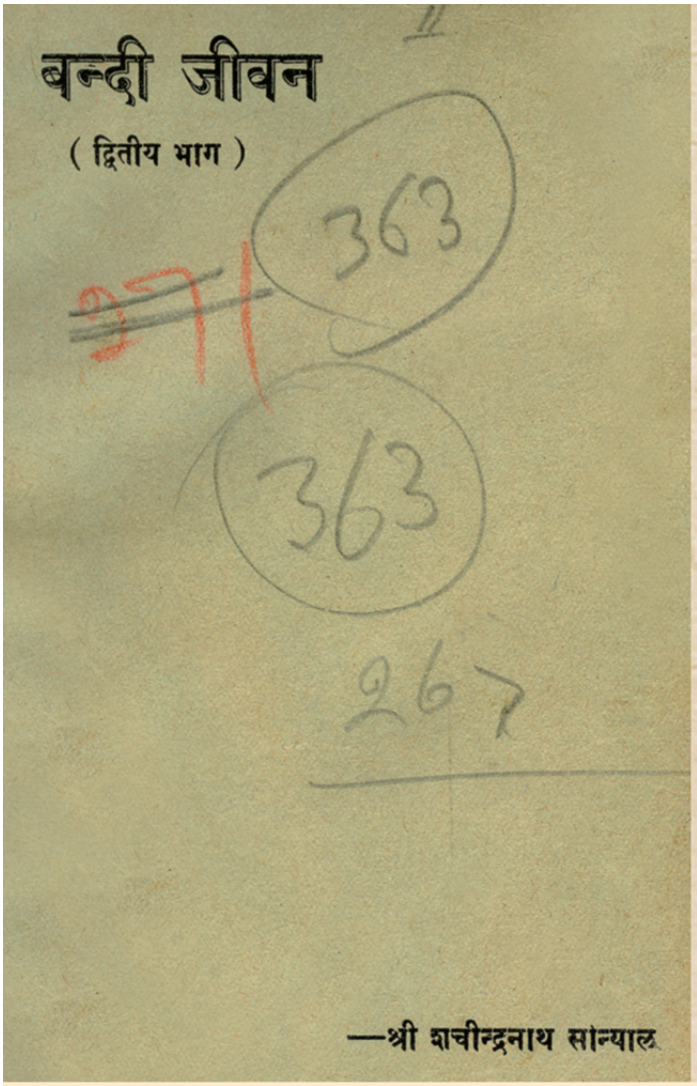

अनुवाद की आलोचना

"बन्दी-जीवन" का पहला भाग हिन्दी में मैंनें पहले पहल सन् १९२३ में पढ़ा था। उस में कुछ ऐसी आन्तरिकता और विचारों को जगाने की अमोघ शक्ति थी कि पढ़ते पढ़ते बार बार मेरे हाथ से किताब बन्द हो जाती, और घड़ी घड़ी भर छत की ओर देखते हुए मैं सोचने में लीन हो जाता। उस की विवेचना-शैली ने मुझे इतना प्रभावित किया कि मेरी इच्छा आलोचना लिखने की हुई। किन्तु, 'उत्थाय हृदि लीयन्ते दरिद्राणां मनोरथाः !' साढ़े तीन बरस तक वह इच्छा दिल की दिल में दबी रही। मुझे स्वप्न में भी ध्यान न था कि उसके दूसरे भाग का हिन्दी अनुवाद मुझे ही करना होगा। आज तक मैंने किसी ग्रन्थ का अनुवाद नहीं किया। अनुवादक की ऊंची गद्दी पर बैठने की महत्वाकांक्षा न कभी मेरे दिल में थी और न होगी। प्रस्तुत पुस्तक का अनुवाद यदि मैंने किया है तो केवल कुछ अपने बन्धुओं और मित्रों के पारस्परिक कार्य को निबाहने के लिए। यह अनुवाद करने के कारण क्या मैं उस की आलोचना के अधिकार से वञ्चित हो सकता हूं ? प्रत्युत, इस अनुवाद के कारण ही तो मुझे "बन्दी-जीवन" का अधिक मनन करने का अवसर मिला है, और वह दबी हुई इच्छा फिर से पनप उठी है।

शचीन्द्रनाथ सान्याल द्वारा बंगला में लिखी पुस्तक 'बन्दी जीवन' का हिंदी अनुवाद

"Bandi Jeevan", a Hindi translation of the original Bengali book authored by Shatindranath Sanyal.